BA Part I (Sub)

व्यावहारिक समाजशास्त्र

Applied Sociology =)

Dr. Chirranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

प्रत्येक विज्ञान के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दो पक्ष होते हैं। विज्ञानों में एक ओर तो शुद्ध एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है एवं दूसरी ओर इन विषयों से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने के लिए सैद्धान्तिक ज्ञान का सहारा लिया जाता है और इसका व्यावहारिक उपयोग किया जाता है।

समाजशास्त्र के भी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष हैं। समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों का व्यावहारिक प्रयोग ही व्यावहारिक समाजशास्त्र है। व्यावहारिक समाजशास्त्र के अन्तर्गत समाज की समस्याओं को समझने एवं उनका समाधान प्रस्तुत करना है। अनेक विद्वानों ने व्यावहारिक समाजशास्त्र को परिभाषित किया है:-

• सार्जेन्ट फ्लोरेन्स (Patterns in Recent Social Research) के अनुसार, "जब एक विज्ञान को व्यावहारिक कहा जाता है तो वह मानता है कि शुद्ध विज्ञान के द्वारा सामान्य सिद्धान्तों, नियमों अथवा मतों के एक विकाय का निर्माण किया गया है जोकि पर्याप्त रूप से निश्चित है।

तब निगम द्वारा सामान्य सिद्धान्तों को एक विशिष्ट मामले में प्रयुक्त करने का प्रश्न शेष रह जाता है।

• फोर्ड जैम्स (Social Problem and social Policy) के अनुसार, " क्रियात्मक अथवा व्यावहारिक समाजशास्त्र को ही अन्य नामों, व्यावहारिक सामाजिक आचारशास्त्र अथवा सामाजिक नीति से सम्बोधित किया जा सकता है। नैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सामाजिक पद्धति के अनुकूलन के अध्ययन को ही व्यावहारिक सामाजिक आचारशास्त्र कहा जा सकता है।

• ग्रोव्स तथा मूरे (Introduction to Sociology) के अनुसार, " जैसा कि विषय के नाम से प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होता है, व्यावहारिक समाजशास्त्र का मुख्य कार्य सामाजिक अनुभव की समस्याओं के विषय में सूचना प्राप्त करना और उनको सुधारना तथा यदि सम्भव हो तो उनके समाधान की पद्धतियों को खोज निकालना है।

अतः स्पष्ट है कि व्यावहारिक समाजशास्त्र समाजशास्त्र की वह शाखा है जो समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रयोग सामाजिक समस्याओं एवं-

व्याधिकीय स्थिति को ज्ञात करने, उन्हें दूर करने के उपाय सुझाने एवं सामाजिक पुनर्निर्माण करने के लिए करती है।

व्यावहारिक समाजशास्त्र की प्रकृति (Nature of Applied sociology) →

(1) व्यावहारिक समाजशास्त्र केवल सिद्धान्त के निर्माण में ही रुचि नहीं रखता वरन् उनके दैनिक व्यावहारिक जीवन में प्रयोग में भी रुचि रखता है।

(2) व्यावहारिक समाजशास्त्र एवं सैद्धान्तिक समाजशास्त्र वस्तुतः एक दूसरे से पृथक नहीं है वरन् एक दूसरे के पूरक एवं सहयोगी है।

(3) व्यावहारिक समाजशास्त्र सामाजिक समस्याओं एवं सामाजिक व्याधिकी को सामाजिक संगठन के अन्तर्गत ही समझने एवं उन्हें दूर करने में रुचि रखता है। सामाजिक संगठन को समझने के लिए यह आवश्यक है जाता है कि उसके व्याधिकीय पक्ष को भी समझा जाए।

(4) व्यावहारिक समाजशास्त्र सामाजिक समस्याओं के वैज्ञानिक हल में रुचि रखता है। यह आदर्शात्मक विज्ञान नहीं होते हुए भी आचार एवं -

- नीतिशास्त्र से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। इस रूप में व्यावहारिक समाजशास्त्र यह बताता है कि समस्या का उचित हल क्या हो सकता है।

(5) व्यावहारिक समाजशास्त्र केवल सामाजिक समस्याओं के समाधान एवं अध्ययन तक ही सीमित नहीं है वरन् इसमें सामाजिक कार्य, सामाजिक सेवाओं, सा० कल्याण एवं सा० पुनर्निर्माण आदि का भी समावेश किया जाए।

(6) व्यावहारिक समाजशास्त्र का सम्बन्ध भूतकाल वर्तमान एवं भविष्य तीनों के अध्ययन से है।

- व्यावहारिक समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र एवं विषय-वस्तु (Scope and Subject matter of Applied sociology) ⇒

व्यावहारिक समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसमें सारा मानव समाज ही आ जाता है, क्योंकि जहां पर भी मानवीय सम्बन्ध पाए जाते हैं, वहां उनमें कुसमायोजन एवं सामाजिक समस्याएं पैदा होने की सम्भावनाएं होती ही हैं। इन समस्याओं को दूर करने एवं सम्बन्धों में समायोजन स्थापित करने, समाज में सुधार लाने -

एवं उसका पुनर्निर्माण करने की आवश्यकता प्रत्येक समाज में पाई जाती है और यह सब व्यावहारिक समाजशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। व्यावहारिक समाजशास्त्र क्षेत्र के अन्तर्गत सामाजिक विघटन एवं समस्याएं, सामाजिक व्याधिकी, सामाजिक सुधार एवं पुनर्निर्माण आदि विषय आते हैं।

- **व्यावहारिक समाजशास्त्र की उपयोगिता :-**

भारत में आज अनेक प्रकार की समस्याएं पाई जाती हैं। उनमें साम्प्रदायिकता, भाषावाद जातिवाद, अस्पृश्यता, अपराध, बाल-अपराध, बेकारी, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, बाल-विवाह आदि प्रमुख है। समाजशास्त्री इन समस्याओं का अध्ययन करके उनके कारणों का पता लगाकर उन्हें हल करने की नीति एवं योजना प्रस्तुत कर सकता है। व्यावहारिक समाजशास्त्र इन समस्याओं को हल करने में तीन प्रकार से योग दे सकता है ▷

(1) निरोधात्मक : भूमिका के रूप में समाजशास्त्री समस्याओं को उत्पन्न न होने देने के लिए उन कारणों एवं परिस्थितियों पर कानूनी पाबन्दी लगाने का सुझाव दे सकते हैं जो समस्याओं को पैदा करते हैं।

(2) उपचारात्मक : भूमिका निभाने के लिए समाजशास्त्री अपराधियों, बाल अपराधियों, अनाथों, विकलांगों एवं रोगियों को प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता प्रदान करने के सुझाव दे सकते हैं।

(3) रचनात्मक : भूमिका निभाने के लिए समाजशास्त्री विभिन्न प्रकार के कल्याण कार्यों एवं पुनर्वास योजनाओं तथा नीतियों के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।